## कविता

# कैसा हो स्कूल हमारा

गिरीश तिवारी*

वै?सि हो स्कू?लि हमार
जहाँ न बस्ता कंधा
जहाँ न पटरी माथाबप?ीड़े, ऐसा हो स्कू?लि हमा
जहाँ न अक्षर कान उख 033ड़े, ऐसा हो स्कू?लि हमार

वै?सि हो स्कू?लि हमार
जहाँ अंक सच-सच बतोएँ, ऐसा हो स्कू?लि हमार
जहाँ प्रश्न हल तक पह? चाए, ऐसा हो स्कू?लि हमा
जहाँ न हो झूठ काबदिखव्वा, ऐसा हो स्कू?लि हमार
जहाँ न सूट-बूट काबहव्वा, ऐसा हो स्कू?लि हमार

वै?सि हो स्कू?लि हमार
जहाँ किताबें निर्भ? 22 बोलें, ऐसा हो स्कू?लि हमा
मन वे?ि पन्ने-पन्ने ख्बोलें, ऐसा हो स्कू?लि हमा
जहाँ न कोई बात छ? पाए, ऐसा हो स्कू?लि हमा
जहाँ न कोई दर्द द? खाए ऐसा हो स्कू?लि हमा

वै?सि हो स्कू?लि हमार
जहाँ न मन में मन-म?इटाव हा
जहाँ न चेहरों में तनाव हो
जहाँ न आँखों में द?इराव हा
जहाँ न कोई भेद-भाव हो

जहाँ पू?लि स्वाभाविक? 37महवे?ि – ऐसा हो स्कू?लि ह
जहाँ बालपन जीभर च? 00वे?ि – ऐसा हो स्कू?लि हम
जहाँ न अक्षर कान उख
जहाँ न भाषा जख्म उ? 31ाड़े – ऐसा हो स्कू?लि हमा